॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

छठा अध्याय

दोहा

नमो देव बसुदेव सुत मर्दन चानुर कंस।
देवकि परमानंद प्रद जग गुरु बर जदु बंस॥ १॥

सोरठा

नमो कृष्न भगवान जन रच्छक हरि तोत्र धर।
करउ बिस्व कल्यान कृपा बृष्टि करि सृष्टि पर॥ २॥

दोहा

बरनि जोग अरु सांख्य तस **उत्तम** जोग जनाइ।
अंतहु भगति बखानि निज कहि पंचम अध्याइ॥ २॥

चौपाई

बरनत कृष्नचंद्र भगवाना। सुनहु पार्थ मम सखा सुजाना॥
जो न कर्म फल लेइ सहारा। करहिं कर्म कर्तब्य अचारा॥
सोइहि संन्यासी सोइ जोगी। जो अस नाहिं ताहि लखु भोगी॥
केवल क्रिया अगन तजि कोई। नतु जोगी त्यागी नहिं होई॥ १
बरनहिं जाहि लोग संन्यासू। कर्म जोग तुम्ह समुझहु तासू॥
निज संकल्प छाँड़ि बिनु कोई। जोगी कस भाँतिहि नहिं होई॥ २
साधइ जोग चाह उर जाहीं। करिहहिं कर्म उचित अस ताहीं॥
पावइ सांति ताहि करि धारन। सोइ परमात्म मिलन महुँ कारन॥ ३
चढ़ै न जब बिषयन्ह कर रंगा। होहिं न जेहि कर्मन्ह महुँ संगा॥
रहहिं अपन संकल्प न कोई। जोगारूढ़ कहाइहिं सोई॥ ४

दोहा

करहु अपन उद्धार नर गिरेउ न चलि बिपरीत।
आप अपन कर सत्रु लखु आप अपन कर मीत॥ ४॥ ५

चौपाई

जो नर आप अपन कहुँ जीता। सोइहि आप अपन कर मीता॥
बिजय अपन पर करहिं न सोई। बयरी आप अपन कर होई॥ ६

जो नर बिजय अपन पर करई। सोइहि समता महुँ थिर रहई॥
सुख दुख होइ मान अपमाना। अनुपयुक्त उपयुक्त बिधाना॥
बिगत बिकार सिद्ध जोगी नर। नित मिलि रहहिं ताहि परमेस्वर॥ ७
तृप्त ग्यान बिग्यानहि अंतस। सम कूटस्थ रहइ इंद्रिन्ह बस॥
मृद[1] पाषान स्वर्न तिन्ह माहीं। सम बुधि जोगारूढ़ कहाहीं॥ ८
सुहृदरु मीत द्वेष्य संगाती। उदासीन मध्यस्थ अराती[2]॥
साधुन्ह पापिन्ह महँ सम होई। सम बुधि सर्वश्रेष्ठ नर सोई॥ ९

दोहा

जस समता उपलब्ध करि कर्म जोग जुत होइ।
पावहिं तस समता मनुज ध्यान जोग जुत सोइ॥ ५ ॥ १०

चौपाई

रहहिं अकेल एकांत निवासा। बस करि तनु अंतस तजि आसा॥
संग्रह बुद्धि भोग रुचि नाहीं। अह निसि मन लगाइ विभु[3] माहीं॥ १०
सुचि थल जहँ बन नदी तलाई। तहँ कुस अजिन[4] दुकूल[5] बिछाई॥
नहिं अति उच्च न तल अति होई। थिर आसन हिलि डुलि नहिं सोई॥
होइहिं तस आसन आसीना। अस नर ध्यानजोग परबीना॥ ११
रोकि क्रिया चित इंद्रिन्ह ताहीं। मन अवरोधि लच्छ निज माहीं॥
अंतस सुद्धि हेतु तेहि खासा। करिहहिं ध्यानजोग अभ्यासा॥ १२
तन कपाल करि ग्रीव समाना। थिर होइहिं बैठहिं मतिमाना॥
अचल होहिं इत उत नहिं देखी। नासा अग्र भाग कहुँ पेखी॥ १३
अब मम रूप सगुन साकारा। ताहि कहउँ जस ध्यान प्रकारा॥

दोहा

ब्रह्मचर्ज जुत सजग मन द्वंद्व रहित भय मुक्त।
मोर सरन गहि बैठि कै मोमहुँ थिर चित जुक्त॥ ६ ॥ १४
बस राखिहिं सब भाँति मन मोमहुँ सतत लगाइ।
थित मम उर निरबान तस परम सांति कहुँ पाइ॥ ७ ॥ १५

१-मिट्टी २-दुश्मन ३-परमात्मा ४-मृगचर्म ५-वस्त्र

खाइहिं अति कछु खाइ नहीं सोवहिं अतिसय कोइ।
जागि रहहिं अति ताहि कर जोग सिद्ध नहिं होइ॥ ८॥

चौपाई

जिन्हकर उचित अहार बिहारा। होइहिं उचित कर्म ब्यवहारा॥
उचित सयन करि जागहिं तेही। जोग सिद्ध दुख नासक एही॥
जब भल भाँति होहिं निग्रह चित। अपन सरूप माझ होइहिं थित॥
तनिक बस्तु बाँछा उर नाहीं। ताहि समय जोगी कहलाहीं॥
बिनु मारुत गति दीपक जोती। हिलत डुलत नहिं थिर जस होती॥
ध्यानाभ्यास जोग रति जाही। थिर चित केरि अवस्था ताही॥
सेवहिं जोग दमन चित होई। पुनि उपराम होहिं चित सोई॥
निज महुँ निज सरूप कहुँ देखी। निज महुँ रहि संतुष्ट बिसेषी॥

दोहा

इंद्रिन्ह ताहि अतीत सुख बुद्धि गम्य परमार्थ।
बिचलित होहिं न तत्व तें पावहिं अस सुख पार्थ॥ ९॥

सोरठा

पाइ लाभ अस सोइ अनत न मानइ जासु बड़।
चलइ न जहँ थित होइ जौं बरु होहिं अपार दुख॥ १०॥

चौपाई

संसृति[1] संग बिकट अति रोगा। ते सब भाँतिहि दुख संजोगा॥
तातें करइ समूल बियोगा। जानहु जासु नाम कहि जोगा॥
चाहिअ बेगि पाइहउँ सोई। थिर मति करइ उचाट न होई॥
अनत उपाइ चहहु तुम्ह जाना। निरगुन निराकार कर ध्याना॥
परिहरि सकल कामना ताही। निज संकल्पहि उतपति जाही॥
मन ते सब इंद्रिन्ह समुदाई। बिषयन्ह ते सब भाँति हटाई॥
धीरज सहित बुद्धि जुत सोई। मंद मंद गति उपरति होई॥
मन बुधि थिर करि ईस्वर माहीं। करिहहिं पुनि चिंतन कछु नाहीं॥

१-संसार

दोहा

यह चंचल अरु अथिर मन जहँ जहँ बिचरहिं जाइ।
तहँ तहँ ताहि हटाइ पुनि ईस्वर माहिं लगाइ॥ ११॥
रित रजगुन भा सांत मन अघ सब जाहि नसाइ।
ब्रह्मभूत जोगिहि तस सात्त्विक सुख कहुँ पाइ॥ १२॥
बिनु अघ जोगी अपन कहुँ ईसहि सतत लगाइ।
सहजहि ब्रह्म सरूप बनि अति सुख माहिं समाइ॥ १३॥

चौपाई

बरनउँ तस जोगिन्ह करि दृष्टी। ते कस भाँति बिलोकहिं सृष्टी॥
सब महँ अपन आप कहुँ देखी। अपन आप महँ सब कहुँ पेखी॥
जो सब भीतर मोहि बिलोकइ। मम भीतर सब कहुँ अवलोकइ॥
मैं अदृस्य नहिं होउँ तिहारे। ते अदृस्य नहिं होहिं हमारे॥
मोमहुँ एकि भाव दृढ़ होई। भजहिं मोहि सब महुँ थित जोई॥
अस नर सब कुछ करत करावा। मोमहुँ सतत करहिं बरतावा॥
लखु जेहि भाँति मनुज अग्यानी। प्राकृत देह अपन करि मानी॥
सुख दुख एक अंग महुँ जाही। मानहिं सकल अपन महुँ ताही॥
ऐसेहि ध्यानजोग जुत ग्यानी। औरन्ह कर सुख दुख निज मानी॥
सब महुँ जाहि एक सम भावा। सोइ जोगी अति श्रेष्ठ कहावा॥

दोहा

कह अरजुन प्रभु जोग जस बरनन कियउ सुभायँ।
मन चंचल तस हेतु निज थिर थिति देखेउँ नायँ॥ १४॥
चंचल दृढ़ मन कृष्न अति मथन सील बलवान।
तिन्हकर निग्रह पवन जिमि मानउँ कठिन महान॥ १५॥

चौपाई

बरनत कृष्नचंद्र भगवाना। सुनहु पार्थ मम सखा सुजाना॥
महाबाहु अस नीक बखानी। सत्य जथार्थ तोर यह बानी॥
कहि तुम्ह बड़ चंचल मन एहा। होत कठिन बस नहिं संदेहा॥
सहित बिरक्ति करइ अभ्यासा। तातें दमन होहिं अनयासा॥

जिन्हकर मन इंद्रिन्ह बस नाहीं। होइहिं जोग कठिन सिध ताहीं॥
मन बस राखि जतन करि कोई। मोरें मत पावहिं सिधि सोई॥३६

दोहा

कह अरजुन श्रद्धालु जन सिथिल जतन जुत सोइ।
बिचलित होइहिं जोग तें तिन्हकै कस गति होइ॥ १६॥३७

चौपाई

पाइहिं जोग सिद्धि जब नाहीं। यह तनु छाँड़ि कहहु कहँ जाहीं॥
की सोइ उभय भ्रष्ट बिनसाईं। छिन्न भिन्न बादल की नाईं॥३८
संसय होत मोहि अति भारी। कृपा करहु श्री कृष्न मुरारी॥
मम संदेह दूर करु सोई। आप समान समर्थ न कोई॥३९
बरनत कृष्नचंद्र भगवाना। सुनहु पार्थ मम सखा सुजाना॥
होत बिनास कबहु नहिं ताहीं। ईह लोक पर लोकन्ह माहीं॥
कोउ कल्यान कर्म करि ताता। दुरगति माझ कबहु नहिं जाता॥४०
तनु तजि पुन्य लोक कहुँ पाई। तहँ सुख लहि बहु बरष बिताई॥
धरि पुनि धरनि लोक बिच देहा। जन्महिं सुचि श्रीमानन्ह गेहा॥४१
सुख ईछा जेहि भई निवारन। जोग भ्रष्ट होइहिं कछु कारन॥
ते नहिं अनत लोक महुँ जाहीं। जन्म लेहिं जोगिन्ह कुल माहीं॥४२

दोहा

जोगिन्ह जीवनमुक्त घर जन्म लेहि तहँ सोइ।
जो अति दुरलभ जगत महुँ बड़े भाग्य तें होइ॥ १७॥

सोरठा

पुरब जन्म कृत ब्याज अनायास साधन मिलहिं।
तस साधन सिधि काज निपुन होइ पुनि जतन करि॥ १८॥

चौपाई

जे जनमहिं श्रीमानन्ह गेहा। कीन्हेउ जतन पूर्व धरि देहा॥
जद्यपि ते बिषयन्ह बस होई। आकर्षहिं ईस्वर ढ़िग सोई॥
कर्म सकाम बेद जुत जासू। लांघहिं तुरत जोग जिग्यासू॥४४

बढ़हिं ताहि अति जोग पिपासा। करत जतन होइहि अघ नासा॥
सिद्ध अनेक जन्म जुत होई। पावहिं जोगि परम सिधि सोई॥ ४५
ग्यानिन्ह कर्मिन्ह तपसिन्ह माहीं। जे निषकाम भाव जुत नाहीं॥
ताहि सकल बिच गत संदेहा। जोगी श्रेष्ठ मोर मत एहा॥ ४६
तातें पार्थ होउ तुम्ह जोगी। कबहु न तात बनउ सुखभोगी॥ ४६

दोहा

सब जोगिन्ह ते मोर मत अति उत्तम मम भक्त।
भजहिं मोहि श्रद्धा सहित मम चरनन्ह अनुरक्त॥ १९॥ ४८
जानेउ छठ अध्याइ कर भगवत गीता सार।
बिनु समता कै सर्वथा होत न बिगत बिकार॥ २०॥
जो मानव कल्यान कै पथपर चालइ सोइ।
कछु भी साधन वह करै समता महुँ थित होइ॥ २१॥